thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 38 16 से 22 अक्टूबर, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 का. कृ.-08

वेद की शिक्षाओं को अपनाकर ही विश्व को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है

– स्वामी आर्यवेश

महर्षि निर्वाण दिवस पर कर्त्तव्य पथ पर चलने का संकल्प लें

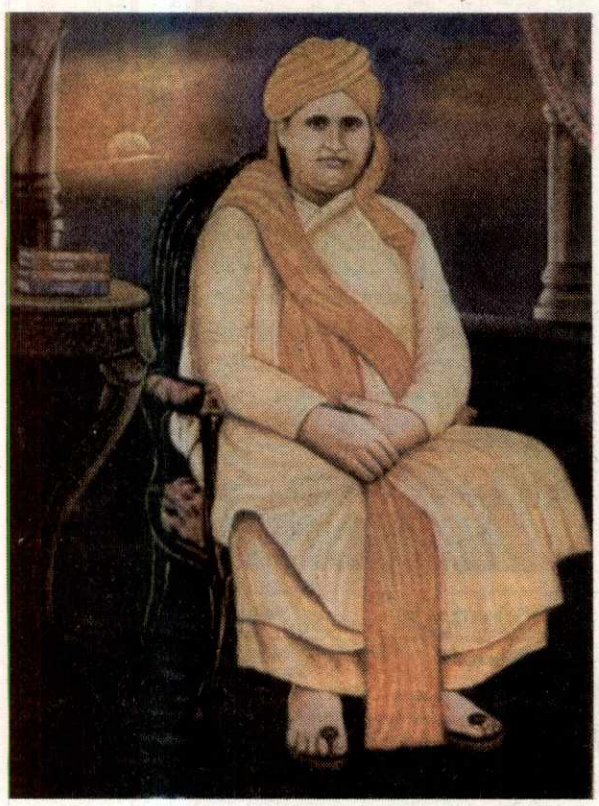

ज्योति पर्व दीपावली का महान सन्देश है अपने जीवन दीप के प्रकाश द्वारा समस्त मानवता को जगमगा देना और ऐसा करने पर ही अन्धकार में पनपने वाले विषमय तत्व विनष्ट होंगे। इसके लिए ज्ञान, प्रकाश, आलोक, ज्योति को अपने जीवन दीप में लाना ही होगा। अन्धकार को विनष्ट करने में, अन्यों के जीवन दीपों को प्रज्ज्वलित करने में हमें समर्पित होकर तन, मन, धन से निष्ठा पूर्वक कार्य करना होगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दीपावली पर्व से गहरा सम्बन्ध है। दीपावली के ही दिन महर्षि दयानन्द जी ने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। समूचा आर्य जगत दीपावली के पर्व को ऋषि निर्वाणोत्सव के रूप में मनाता है और इस दिन उनके महत्व योगदान और विशेषताओं को स्मरण किया जाता है उन्हें नम्र श्रद्धांजलि दी जाती है। आर्य समाज के इतिहास में दीपावली का पर्व स्वामी जी का स्मृति पर्व है। ऋषि दयानन्द ने दीपावली के दिन शरीर का त्याग कर संसार को सन्देश दिया था, "असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतम् गमय।

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना अध्यात्म, दर्शन, धर्म, शिक्षा, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व को ध्यान में रखकर की थी। और इन क्षेत्रों में पनप रही अव्यवस्था, अप संस्कृति, उच्छृंखलता, अवैज्ञानिकता के उन्मूलनार्थ वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया था। हम इस लक्ष्य में कितना सफल हुये हैं महर्षि निर्वाण दिवस के अवसर पर हमें गहन चिन्तन करना होगा।

अगले पृष्ठ पर जारी है

रियायती मूल्य पर चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य प्राप्त करने का अन्तिम अवसर

सार्वदेशिक सभा द्वारा वेदों के पुनः प्रकाशन का कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। कम मूल्य पर चारों वेदों के हिन्दी भाष्य को प्राप्त करने के सुनहरे अवसर से आप वंचित तो नहीं रह गये हैं। यदि ऐसा है तो शीघ्र ही 2100/- रुपये का चैक/ड्राफ्ट/नकद 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड (रामलीला मैदान) नई दिल्ली-2 पर अग्रिम भेजकर अपना वेद सैट सुरक्षित करा लें। यह सुविधा दीपावली पर्व तक ही प्राप्त हो सकेगी। अतः अविलम्ब अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें।

स्वामी आर्यवेश, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

पूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह जी की कर्मस्थली जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, (बागपत) उत्तर प्रदेश में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को सुनने उमड़ा आर्यों का जन-सैलाब

जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत, उत्तर प्रदेश में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उपस्थित हजारों आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए

विस्तृत समाचार पृष्ठ 5 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान के उपरान्त पंजाब में भी सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का किया गया भव्य स्वागत

वैदिक संस्कृति ही देश का उद्धार कर सकती है

– स्वामी आर्यवेश

महर्षि दयानन्द धाम, अमृतसर ने 51 हवन कुण्डों पर किया विशाल गायत्री महायज्ञ

अमृतसर 5 अक्टूबर, 2014 : वैदिक सांस्कृतिक विरासत सम्भाल कार्यक्रम के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द धाम के तत्वावधान में स्थानीय मयूर होटल, अमृतसर में 51 हवन कुण्डों पर आधारित 111 यजमानों के द्वारा विशाल गायत्री महायज्ञ ओम प्रकाश आर्य की अध्यक्षता में किया गया।

आचार्य दयानन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में 111 यजमानों ने यज्ञाग्नि में अपनी आहुतियाँ भेंट की। शास्त्री जी ने सभी यजमानों से संकल्प करवाया कि आज के इस भागदौड़ भरे जीवन में एक यज्ञ ही ऐसा सहारा है जिसके माध्यम से सभी परेशानियों का हल निकाला जा सकता है। शास्त्री जी ने महीने में कम से कम एक दिन यज्ञ करने का संकल्प करवाया। इनके

साथ श्री ओम प्रकाश शास्त्री, डी. ए. वी. इण्टरनेशनल स्कूल, अमृतसर एवं श्री मनोहर शास्त्री, डी. ए. वी. स्कूल दसुहा ने भी यज्ञ में सहयोग किया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री चन्द्रशेखर शर्मा अध्यक्ष ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा पंजाब, महन्त रमेशानन्द जी राष्ट्रीय अध्यक्ष एन्टी क्रप्शन मोर्चा, एड. सुलक्षण सरीन–उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, श्री तरसेम लाल आर्य–मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सुखदेव राजभगत वेद प्रचार अधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, डॉ. शमशेर दिलावरी डायरेक्टर काश्मीर फार्मेसी, श्रीमती स्वराज ग्रोवर प्रमुख समाज सेविका ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी। इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी का अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार पंजाब में पधारने पर जोरदार स्वागत किया गया। स्वामी जी को फूल मालाओं से विभूषित किया गया तथा विभिन्न संगठनों के द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज नवाकोट, आर्य समाज माडल टाऊन, आर्य समाज लक्ष्मणसर, आर्य समाज तरन–तारन, आर्य समाज पट्टी, आर्य समाज रमदास, आर्य समाज बरनाला से आये अधिकारियों ने भी स्वामी जी का फूल मालाओं से स्वागत किया।

इस गायत्री महायज्ञ के माध्यम से आर्य समाज ने एक कौतुहल भरा कार्य किया है। अमृतसर के विभिन्न संगठन जैसे ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा, कन्ज्यूमर बेलफेयर फार्म, हिमाचल कल्याण सभा, ऑल इण्डिया एन्टी क्रप्शन मोर्चा, लोक हित संघर्ष मंच, ऑल इण्डिया आतंक पीड़ित संगठन सभी को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया। तथा आगामी कार्यक्रम लोक चेतना यात्रा के माध्यम से पूरे पंजाब में नशाखोरी, नारी उत्पीड़न, भ्रष्टाचार आदि जो आज समाज को प्रभावित कर रहे हैं उसे दूर करने के लिए ये संगठन मिलकर पूरे पंजाब में आवाज बुलंद करेंगे।

इस कार्यक्रम में अपने सम्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वैदिक संस्कृति ही समाज की प्रहरी है और हवन यज्ञ आज के प्रदूषण को दूर करने का साधन है। यज्ञ स्वयं में पर्यावरण को ठीक करने का कार्य करता है। यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। आज समाज से प्रदूषण, पाप, पाखण्ड, अंधविश्वास, अत्याचार, भ्रूण हत्या, कन्या उत्पीड़न व भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए यज्ञ प्रक्रिया से जुड़ना होगा। स्वामी जी ने कहा कि – आज हम मानसिक रूप से इतना गिर चुके हैं कि हमें क्या खाना है, क्या पीना है, किससे हमारा शरीर स्वस्थ रह सकता है?आज हम अपने जीह्वा के स्वाद के लिए निर्मम प्राणियों की हत्या करते जा रहे हैं। उसके पाप और हाय से हम भयंकर से भयंकर बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। स्वामी जी ने कहा आज हमारे देश में लाखों की संख्या में बूचड़खाने खुले हुए हैं जिसके माध्यम से प्रत्येक दिन करोड़ों की संख्या में पशुओं की हत्या की जा रही है। इसे रोकने के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाकर एवं प्रस्ताव पारित कर सरकार को इस जघन्य अपराध को रोकने के लिए आवाज बुलंद करने की आवश्यकता है।

स्वामी जी ने आये हुए विभिन्न संगठनों को एक साथ मिलकर कार्य करने के लिए आभार व्यक्त किया तथा इस सुन्दर कार्यक्रम के आयोजन के लिए साधुवाद दिया।

महामंत्री ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि आज हमारी पुरानी संस्कृति नष्ट होती जा रही है। अपनी संस्कृति को पुनः स्थापित करने के लिए अपने माता–पिता, आचार्य के प्रति कर्त्तव्यों को निभाना, उनकी सेवा मान व सम्मान करना व अपने बुजुर्गों को खुश करना हमारी संस्कृति को जागृत करना है। उन्होंने कहा कि आज समाज में प्राईवेशी का रोग उत्पन्न हो चुका है इसे दूर करने का साधन केवल मात्र एक ही है और वह है 'यज्ञ' जो संगतिकरण सिखाता है, जहाँ संगतिकरण होगा बुरे कामों से बचेंगे, अच्छे कार्य करेंगे, अच्छे विचार प्राप्त करेंगे। इसलिए सभी समस्याओं का समाधान केवल यज्ञ है। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. नवीन आर्य ने बड़े बुद्धिमत्ता पूर्वक किया।

इस कार्यक्रम के संयोजन में विजय कुमार आर्य, श्री बलवंत राय आहूजा, नरेन्द्र आर्य, राकेश पसाहन, सुलोचना आर्या, राकेश पसाहन, विजय सर्राफ, राज कुमार, अशोक वर्मा, विनोद मदान, राज कुमार योगाचार्य, जुगल महाजन, राकेश आर्या, सुनीता पसाहन, कमलेश रानी, मीना पसाहन, नीलम पसाहन, कुसुम आर्या, शशि अरोड़ा, विजय अरोड़ा, बालकृष्ण आदि ने अनथक परिश्रम कर सफल किया। अन्त में प्रीतिभोज का सुन्दर सुस्वाद भोजन लेकर आनन्द उठाया।

– आचार्य दयानन्द शास्त्री, महर्षि दयानन्द धाम, बाजार हंसली, अमृतसर

पृष्ठ–1 का शेष

महर्षि निर्वाण दिवस पर कर्त्तव्य पथ पर चलने का संकल्प लें

ऋषिवर दयानन्द ने जिन मूल्यों का सूत्रपात किया वे वेद पर आधारित हैं। वेद की शिक्षाओं को अपना कर ही समूचे विश्व को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। स्वामी दयानन्द जी ने इस संसार से विदा लेने से पूर्व अपने भक्तों को अपने पीछे खड़े होने व भवन के दरवाजे, खिड़की खोलने का आदेश दिया था जिसके दो निहितार्थ थे, एक तो वेद के पीछे चलो अर्थात् वेदों की ओर लौटो और दूसरा आर्य समाज के दरवाजे सबके लिए खुले रखो। आज आवश्यकता है उपयोगी आर्य समाजों के निमार्ण की। अर्थात् आर्य समाज केवल साप्ताहिक सत्संग के लिए न हों बल्कि वहां योग, संस्कृत शिक्षण, स्वास्थ्य शिविर, पुस्तकालय, वाचनालय, नियमित रूप से चलें। गो-रक्षा, भ्रूणहत्या, आतंकवाद, नशाखोरी, जातिवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्तन बैठकें हों। हम कितने सक्रिय, शालीन, तेजस्वी एवं योग्य बनकर विश्व का कल्याण कर रहे हैं, इसी पर आर्य समाज का भविष्य निर्भर है। जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण व नारी उत्पीड़न आदि से समाज त्रस्त है और आर्य समाज को ही इनका उन्मूलन करना है। आर्य समाज की आज देश व विश्व मानव समाज को पहले से भी अधिक आवश्यकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि मत एवं वर्ग भिन्नता को समाप्त कर वेद के अनुरूप समाज बनाने तथा अपने अभीष्ट उद्देश्य के लिए हम सबको अनवरत प्रयास करते रहना होगा।

ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रत्येक मानव का यह कर्त्तव्य है कि वह स्वयं वेद का स्वाध्याय करे और अन्य जनों को भी प्रेरणा प्रदान करे। वेद के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द ने वेद के स्वाध्याय को परम धर्म घोषित किया है। आर्य समाज के तृतीय नियम में उन्होंने लिखा वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वेद वह संजीवनी है जिससे व्यक्तित्व में चमक आती है, समाज में तेजस्विता आती है। वेद के ज्ञान का आचरण उसकी शिक्षाओं का जीवन में साकार करना, उच्चता प्राप्त करने का एक मात्र साधन है। महर्षि दयानन्द के अनुसार वेद विश्व भर के लिए प्रकाश स्तम्भ है इनमें आचार संहिता के अतिरिक्त मानव जीवन के लिए उपयोगी सभी शिक्षाओं का सार संगृहीत है।

सार्वदेशिक सभा ने वेदों के पुनः प्रकाशन का संकल्प लिया था और वह कार्य आप सबके सहयोग से पूर्णता की ओर अग्रसर है। दीपावली पर्व पर अपने परिचितो और रिश्तेदारों को उपहार देने की परम्परा है इस बार आप सब अपने परिचितों और परिवारजनों को वेद का सैट उपहार स्वरूप प्रदान करें, तो कितना अच्छा हो। आप सबका यह दायित्व बनता है कि वेदों के प्रकाश से सम्पूर्ण अन्धकार को विच्छिन्न कर दें। और यह तभी होगा जब हर परिवार में, हर पुस्तकालय में, हर विद्यालय में वेदों का प्रकाश पहुंचे। वेद ज्ञान से ही मनुष्यों का चरित्र उन्नत हो सकता है। वेद का चिन्तन व सन्देश सार्वभौमिक, सार्वकालिक, सार्वजनिक तथा सार्वदेशिक है। नैतिकता सदाचार, चरित्र अध्यात्म साधना धर्म पारस्परिक व्यवहार के जीवन मूल्य जिन्हें अपना कर हम उन्नत हो सकते हैं और ये हमें वेदों के पठन-पाठन से ही प्राप्त होंगे।

ज्योति पर्व दीपावली की
हार्दिक शुभकामनाएं

सार्वदेशिक सभा परिवार समस्त आर्यजनों को दीपावली के पुनीत पर्व पर हर प्रकार की सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और शांति की कामना से परिपूर्ण बधाई देता है।
दीपावली के दिन ही महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण समस्त आर्यों के लिए ईश्वर भक्ति के मार्ग की सर्वोच्च प्रेरणा बने, ऐसी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है।

स्वामी आर्यवेश प्रधान | *पं. माया प्रकाश त्यागी* कोषाध्यक्ष | *प्रो. विट्ठलराव आर्य* मन्त्री

thearyasamaj.org

ज्योति पर्व - दीपावली

- स्व. आचार्य राजेन्द्र शर्मा

सत्ता और चेतना से समन्वित जीवात्मा आनन्द की खोज में सतत प्रयासरत रहता है। आनन्द उसका ध्येय है, आनन्द उसकी सीमा है जहां तक उसको दौड़ना है। जीवन-यात्रा का अन्तिम सोपान आनन्द है। परन्तु मानव भटक जाता है, पथ-भ्रष्ट हो जाता है, और उसकी अभीप्सा मात्र अभीप्सा ही रह जाती है। शाश्वत आनन्द की उपलब्धि के लिए उसका प्रयास सृष्टि के उषा-काल से ही निरन्तर चल रहा है। पर्वों का समायोजन उसी आनन्द की प्राप्ति हेतु एक सशक्त प्रयास है। मानव मस्तिष्क प्रपंचों और मायाजालों में फंसकर मृग-मरीचिका की अतृप्त तृष्णा के चक्कर में सदा ही व्याकुलता से छटपटाता रहता है। पर्व समय-समय पर आकर उसको आनन्द से भर देते हैं, हर्ष, उल्लास से पूर्ण कर देते हैं, उमंग और उत्साह से सराबोर कर जाते हैं और यही पर्वों की सार्थकता है। दीपावली ऐसा ही महान् पर्व है जिसको समृद्धि का पर्व कहा जाता है। आध्यात्मिक सम्पदा और भौतिक सम्पदा से हमारा अपना जीवन तथा समस्त राष्ट्रीय जीवन सम्पन्न बने तथा यह समृद्धि समस्त विश्व को अभाव मुक्त करने में समर्थ हो जिससे प्रत्येक मानव आशा और विश्वास से भरकर खिलखिला सके, यह है सार्वभौम उद्देश्य इस महान गरिमामय पर्व का जिसको ज्योति पर्व के रूप में पुकारा जाता है।

ज्योति-पर्व नामकरण ही इस महान उद्देश्य की सफलता के केन्द्र बिन्दु को समाहित किए हुए है। इस रहस्य को हम इस तरह से समझ सकते हैं कि अन्धकार अविद्या समस्त क्लेशों का क्षेत्र है। महर्षि पतंजलि की यह घोषणा शाश्वत सत्य है। इसलिए यह पर्व अन्धकार अज्ञान के विनाश का प्रतीक है और हम सबको संकल्प लेना है कि कहीं पर भी अन्धकार नहीं रहने देंगे। छोटे-छोटे दीपकों को प्रज्ज्वलित कर हम इसी भावना को अभिव्यक्त करते हैं और सर्वशक्तिमान परम प्रभु से सहयोग मांगते हैं कि तमसो मा ज्योतिर्गमय। क्योंकि हम जानते हैं कि अन्धकार, तम, अज्ञान ही वास्तव में मृत्यु है और प्रकाश, ज्योति ज्ञान ही अमृत है। प्रकाश प्रसन्नता और आह्लाद देता है तथा अन्धकार भय और शंका उत्पन्न करता है।

छोटा-सा लघु मिट्टी का दीप आज तिरस्कृत कर दिया गया है। विद्युत प्रकाश की चकाचौंध से हमने मिट्टी के दीप, नई रूई, सरसों के तेल और उसकी शांतिदायिनी, प्रदूषण, विनाशिनी, दृष्टिवार्धिका शक्ति को ही नहीं विस्मृत कर दिया अपितु अपने जीवन के लक्ष्य से ही वंचित हो गए। मिट्टी का यह लघु दीप प्रतीक है अपने इस मिट्टी के शरीर का जिसको दीपक बनाकर हमको स्वयं को प्रकाशित करना है और प्रज्ज्वलित स्व जीवन दीप से जन-जन दीपों को प्रदीप्त करना है। स्वदीप में न्यूनता नहीं आती है और अन्धकारित अन्य जीवन दीप मेरे स्वल्प प्रकाश से ही जगमगा उठते हैं। तब ही महाकवि की यह भावना चरितार्थ होती है कि-

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना।
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।।

ज्योति-पर्व दीपावली का महान् सन्देश है, अपने जीवन-दीप के प्रकाश द्वारा समस्त मानवता को जगमगा देना और तभी अन्धकार में पनपने वाले विषमय तत्व विनष्ट होंगे। इसके लिए ज्ञान, प्रकाश, आलोक, ज्योति को अपने जीवन दीप में लाना ही होगा। अन्धकार को विनष्ट करने में अन्यों के जीवन दीपों को प्रज्ज्वलित करने में पथ-भ्रष्टों के पथ-प्रदर्शन में, तिमिराच्छिन्न हृदयों को जगमगाने में यदि अपना दीपक बुझ भी जाए तो यही उसकी सार्थकता है। सूर्य के जाने के पश्चात् जैसे दीपक कह उठता है कि तुम भुवन भास्कर चले गए परन्तु तुमसे प्रेरणा प्राप्त कर मैं तुम्हारे आगमन तक अन्धेरे से युद्ध करता रहूँगा यह है पावन संकल्प जो आज जन-जन को लेना है।

भुवन भास्कर महर्षि दयानन्द के 'कैवल्यधाम' में समाहित होने के पश्चात् आर्यजनों पर यह उत्तरदायित्व आता है कि ज्ञान के मार्ग समाप्त न होने पाएं, प्रकाश के स्तम्भ टूटने न पाए और सत्य अर्थ का प्रकाश होता रहे जिससे मानवता भटकने न पाए तथा सत्य का राजमार्ग सदा प्रशस्त रहे।

परन्तु आर्यों! सतर्क और सावधान रहो कि कहीं यह ज्योति पर्व अन्धकार पर्व न बन जाए। अपने आप को और अपने घर को आलोकित करने का तात्पर्य यह नहीं है कि अपना अन्धकार तुम पड़ोसी के घर में ढकेल दो और उसके जीवन को और उसके घर को अन्धकार ग्रस्त कर दो। स्मरण रखो पड़ोस का अन्धकार आपके आलोक को भी तहस-नहस कर देगा और समस्त आर्यत्व पिशाचत्व में परिवर्तित हो जायेगा। अन्धकार में हम अपने आपको ही देखते हैं, अन्य किसी की भी अनुभूति हमको नहीं होती है। अतः अन्धकार विनाश हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। वेद का उद्बोधन हमें सदा स्मरण रखना है- 'आर्यः ज्योतिरग्रा।' और 'उरू ज्योतिः चक्रथुः आर्याम्।'

मशालें वेद की लेकर अन्धेरा जो मिटा डाले।
उठे तो दिन निकल आये वही तो आर्य होता है।।

- डी-110, आर्य समाज शकरपुर, दिल्ली-92

जगमग दीप जलाएं

- राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

आओ! आर्य सपूतों आओ! जगमग दीप जलाएं।
गहन तिमिर में भटक रही जगती को राह दिखाएं।।
मिट्टी के दीपों से निश्चय, मिटता नहीं अन्धेरा,
अगणित तारों के उगने से, होता नहीं सबेरा,
दानवता के तिमर सैन्य ने, महिमण्डल है घेरा,
रहा नहीं है मानवता का, सुन्दर-सुखद बसेरा,
बिखरा किरणें ज्ञान ज्योति की, नया सबेरा लाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।
तम के अंचल में सोता है, आज यहां दिनमान,
ज्ञान हमारा कहां लुप्त है, विस्तृत क्यों अज्ञान?
चलो, देख लो, कहां सो रहा, भारत का अभिमान,
सत्य-शिवम्-सुन्दरता पूरित,कहां गए प्रतिमान?
बन करके आलोक पुंज हम, जाग्रत ज्योति जगाएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।
लोभ-मोह-मद मत्सर का है फैला पारावार,
काम-क्रोध बढ़ रहा चतुर्दिक, नष्ट धर्म का सार,
मानवता के तत्वों का क्यों?होता है व्यापार,
भौतिक संस्कृति नहीं कभी, कर सकती है उपचार,
धर्माध्यात्म प्रदीप प्रमाहम, पुनः प्रदीप्त कराएं।
गहन तिमिर में भटक रही, जगती को राह दिखाएं।।
ऐसा दीप जले जिससे, न रहे तिमिर का लेश,
ज्योतिर्मय हो पूर्ण धरा यह, प्रगटे ज्ञान दिनेश,
दम्भ द्वेष-मिथ्या-हिंसा का बचे नहीं अवशेष,
प्रेम-दया-ममता का, सदा रहे उन्मेष,
शांति सफलता-समृद्धि के संगीत मनुज सब गाएं।
गहन तिमिर में भटक रही जगती को राह दिखाएं।।

- मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ. प्र.)

वैदिक विद्वान स्व. श्री राजपाल सिंह आर्य की स्मृति में विशेष यज्ञ का आयोजन

2 अक्टूबर को प्रातः 9 से 11 बजे तक वैदिक विद्वान स्व. श्री राजपाल सिंह आर्य तथा उनकी धर्मपत्नी की स्मृति में सभा के उपमंत्री श्री मधुर प्रकाश के निवास स्थान पर विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री मधुर प्रकाश शास्त्री उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रीतेश, मधुर जी की दोनों बहनें सरिता आर्या तथा मधुबाला शास्त्री, मधुर जी की बेटी भावना तथा दामाद श्री प्रतीक जी आदि विशेष रूप से यजमान के रूप में उपस्थित थे। सबने बड़ी श्रद्धा के साथ विशेष यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान कर अपने पूर्वजों को स्मरण किया।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्व. श्री राजपाल शास्त्री तथा स्व. माता जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने बताया कि श्री राजपाल शास्त्री जी ने मधुर प्रकाशन के माध्यम से विशिष्ट आर्य साहित्य प्रकाशित करके विश्व के कोने-कोने में पहुँचाकर आर्य समाज के सिद्धान्तों तथा मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में विशेष भूमिका निभाई थी। वे उच्च कोटि के विद्वान, मनीषी तथा लेखक भी थे। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना करके सरल भाषा में प्रकाशित किया। जिसके लिए वे सदा याद किये जायेंगे। स्वामी जी ने उनके कार्यों को स्मरण करते हुए परिवारजनों को प्रेरणा दी कि वे उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में परोपकार एवं धर्म के मूल्यों को अपनायें तथा आर्य विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य करें। इस अवसर पर अन्य गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त श्री प्रतीक जी की माता जी तथा ब्र. दीक्षेन्द्र जी ने भी आहुतियाँ प्रदान की।

thearyasamaj.org

राजस्थान के शिवगंज (सिरोही) में किया गया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का भव्य अभिनन्दन

28 सितम्बर, रविवार को स्वामी आर्यवेश जी अपने लम्बे काफिले के साथ जालौर से शिवगंज पहुँचे जहाँ सैकड़ों मोटरसाईकिलों पर ओ३म् ध्वज लगाये हुए युवक तथा गाड़ियों में सवार कार्यकर्ताओं तथा क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों ने भव्य स्वागत किया। नगर के मुख्य बाजार से होते हुए नारे लगाते हुए बीच-बीच में उत्साही लोगों द्वारा माल्यार्पण करते हुए विशाल काफिला शिवगंज पहुँचा, जहाँ भोजन की व्यवस्था थी। सैकड़ों आर्यवीरों ने वहाँ पहुँचकर सहभोज किया। स्वामी जी के साथ सार्वदेशिक सभा के उपमंत्री श्री रामसिंह आर्य जोधपुर से ही चल रहे थे। उनके अतिरिक्त आर्यनेता श्री विरजानन्द, आचार्य संतराम, ब्र. दीक्षेन्द्र तथा आर्यवीर दल के राष्ट्रीय संयोजक श्री भंवरलाल आर्य, श्री नारायण सिंह आर्य, अजीत सिंह, शिवकुमार सोनी, हरि सिंह आर्य के अतिरिक्त जालौर से श्री दलपत सिंह आर्य राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बॉक्सिंग एसोसिएशन, श्री प्रशान्त सिंह अध्यक्ष आर्यवीर दल जालौर, श्री कृष्ण कुमार आर्यवीर दल जालौर, विनोद कुमार आर्य आदि सम्मिलित थे। भोजन के उपरान्त अपने काफिले के साथ स्वामी आर्यवेश जी कन्या गुरुकुल शिवगंज पहुँचे जहाँ प्रसिद्ध वैदिक विदुषी सूर्या देवी तथा आचार्या धारणा याज्ञिकी ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक भावभीना स्वागत किया। गुरुकुल में स्वामी जी के साथ पाली के धनजी भाई तथा सुमेरपुर आर्य समाज के कार्यकर्ता तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति थे। इस अवसर पर वैदिक विदुषी सूर्या देवी ने गुरुकुल की

गतिविधियों से अवगत कराया तथा विस्तार से अन्य जानकारियाँ प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि स्वामी आर्यवेश जी अत्यन्त कर्मठ तथा आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक हैं। आर्य समाज को पुराने गौरव को प्राप्त कराने के लिए आप कटिबद्ध हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आर्य समाज के विखण्डन को दूर कर आप सभी घटकों को मिलाकर चलने में सक्षम हैं। अगर आपने इस कार्य में सफलता पाई जिसकी हमें पूर्ण आशा है तो यह आर्य समाज के लिए विशेष उपलब्धि होगी। उन्होंने स्वामी जी को गुरुकुल का साहित्य भी भेंट किया। काफिले में उपस्थित सभी व्यक्तियों ने गुरुकुल में दान देकर तथा साहित्य आदि क्रय करके विशेष सहयोग प्रदान किया। गुरुकुल से आर्य समाज में लौटने के बाद जोधपुर संभाग के 6 जिलों के प्रमुख आर्यवीरों तथा कार्यकर्ताओं की बैठक स्वामी जी की अध्यक्षता में की गई जिसका संयोजन श्री रामसिंह जी आर्य ने किया। इस बैठक में अन्य गतिविधियों के अतिरिक्त एक विशाल संभागीय सम्मेलन करने के निर्णय के साथ सभा सम्पन्न हुई।

इसी दिन रात्रि में 7 से 9 बजे तक विशाल जनसभा का आयोजन किया गया। इससे पूर्व आर्यवीर दल व्यायामशाला के मुख्य द्वार का शिलान्यास भी स्वामी जी के कर-कमलों सम्पन्न हुआ। सैकड़ों आर्यवीरों की उपस्थिति में श्री सचिन शास्त्री के मंगलाचरण के साथ स्वामी जी ने शिलान्यास सम्पन्न किया। इस शिलान्यास में एक ताम्रपत्र पर महर्षि दयानन्द के वाक्य लिखवाकर नींव में रखे गये। विशाल जनसभा को

सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर प्रकाश डालते हुए कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे नये सिरे से आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को समाज के सामने लाने के लिए उठ खड़े हों। जब तक राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं के लिए संघर्ष तथा आन्दोलन का रास्ता नहीं अपनायेंगे तब तक आर्य समाज भी तेजस्वी नहीं बन पायेगा। उन्होंने कहा कि आज युवाओं को सही मार्ग दिखाने की जरूरत है। यदि उन्हें रचनात्मक एवं समाज परिवर्तन की दिशा में सकारात्मक कार्यक्रम हम दे सके तो पूरे देश की युवा पीढ़ी आर्य समाज से जुड़ सकती है। स्वामी जी ने कहा कि पहले उन्हें अपने दायरे में लाना तथा अपने व्यवहार एवं आत्मीयता से उन्हें आर्य सिद्धान्तों से अवगत कराना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। स्वामी जी ने आर्य समाज के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्य समाज के बलिदानियों ने, संघर्षशील युवाओं ने तथा राष्ट्रवादी बुजुर्गों ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाकर आर्य समाज का नाम गौरवान्वित किया था तो आज हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते?उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के विचार आज की परिस्थिति में भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं। उन्होंने घोषणा की कि उनका संकल्प है कि आर्य समाज में चल रहे विघटन एवं गुटबाजी को समाप्त कर एक सूत्र में पिरोने के लिए हम कटिबद्ध हैं। उन्होंने कहा कि आर्य नेताओं तथा अन्य महानुभावों के सकारात्मक सहयोग की हम अपेक्षा रखते हैं। उन्होंने चारो वेदों के हिन्दी वेद भाष्य की चर्चा करते हुए कहा कि सार्वदेशिक सभा ने अत्यन्त कम मूल्य पर आम-जनता में वेद पहुँचाने का संकल्प लिया है और मात्र 2100/- रुपये में वेद देने की घोषणा की। दीपावली से पूर्व जिन व्यक्तियों के अग्रिम आदेश सभा कार्यालय में प्राप्त हो जायेंगे उन्हें यह सुविधा प्रदान की जायेगी। उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक परिवारों में वेद भाष्य पहुँचाने के लिए आपलोग प्रयास करें। क्योंकि वेद ज्ञान से प्रेरणा प्राप्त कर हम सब अपने जीवन में आध्यात्मिकता को अपना सकते हैं। इस अवसर पर श्री राम सिंह आर्य ने महर्षि दयानन्द की विचारधारा को ही सब समस्याओं का विकल्प बताया। उन्होंने पुरजोर घोषणा की कि जब तक देश महर्षि दयानन्द के विचारों को आत्मसात नहीं करेगा तब तक देश निरन्तर रसातल को जाता रहेगा। सभा में श्री विरजानन्द जी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। पूरे आयोजन का संयोजन समर्पित व्यक्तित्व के धनी

आदरणीय श्री हरदेव सिंह आर्य जी ने किया। उनके साथ उनके तमाम सहयोगी आर्य समाज के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ताओं ने कन्धे से कन्धा मिलाकर उनका भरपूर सहयोग किया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी का तथा समस्त अतिथियों का माल्यार्पण तथा शॉल भेंटकर अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने स्वागत किया। तदुपरान्त स्वामी जी के कर-कमलों से कार्यक्रम के विशिष्ट सहयोगियों को स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मानित कराया गया।

उत्तर प्रदेश के ग्राम-भौंराकलां, मुजफ्फरनगर में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन

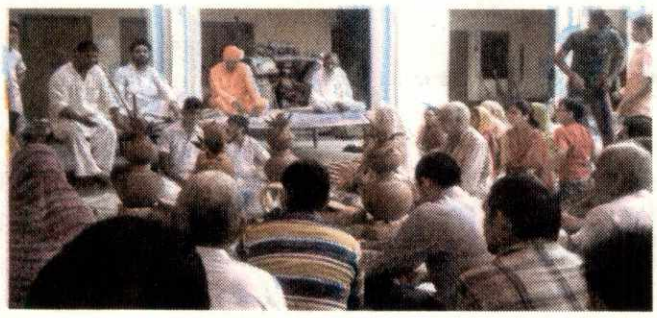

2 व 3 अक्टूबर को ग्राम भौरा कलां में डॉ. इकबाल सिंह के निवास स्थान पर सामवेद पारायण यज्ञ के विशेष आयोजन में डॉ. इकबाल सिंह के विशेष आग्रह पर स्वामी आर्यवेश जी पहुँचे तथा 2 अक्टूबर की शाम तथा 3 अक्टूबर की सुबह उनके प्रभावशाली गरिमामयी प्रवचन हुए। स्वामी जी के प्रवचनों से समस्त ग्रामवासी कृत-कृत हो उठे तथा आग्रह किया कि निकट भविष्य में कई गाँवों के सहयोग से एक बहुत बड़ा आयोजन करना चाहते हैं जिसमें स्वामी जी को विशेष रूप से आमंत्रित किया जायेगा। अधिक से अधिक लोगों को प्रेरणा मिल सके इसके लिए यह आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर स्वामी जी ने मनुष्य जीवन की सार्थकता तथा यज्ञीय भावना पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनुष्य जीवन जन्म-जन्मांतरों के शुभ कार्यों के द्वारा प्राप्त होता है। मानव जीवन सर्वोत्तम योनि होती है और इसको सार्थक बनाने के लिए मनुष्यों को वे कार्य करने चाहिए जिससे उनकी उन्नति हो तथा उनके जीवन में आध्यात्मिकता प्रवाहित हो। स्वामी जी ने कहा कि पतन की ओर न जाकर हम सब उत्थान की ओर चलें। स्वामी जी ने यज्ञ को परोपकार की संज्ञा देकर बताया कि देवयज्ञ जिस प्रकार परोपकार का माध्यम है हम सबको भी परोपकार के कार्यों में आगे बढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि यज्ञ को ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म बताया है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि जिस कार्य से प्राणी मात्र का उपकार होता है वह कार्य यज्ञ कहलाता है। अत: अपने लिए जीने के बदले औरों के दु:ख-सुख में शामिल होना चाहिए। मनुष्य की परिभाषा बताते हुए स्वामी दयानन्द जी ने स्पष्ट कहा ''मुनष्य कौन?मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख-दु:ख और हानि-लाभ को समझें। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करें। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसे कितना ही दारुण दु:ख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।'' वर्तमान में जब भौतिकवाद की चकाचौंध में लोग ग्रस्त हैं ऐसे में यज्ञ को जीवन में अपनाने की और अधिक आवश्यकता है। वैदिक संस्कृति भोगवाद के बदले त्यागवाद पर आधारित है। औरों को खिलाकर बाद में स्वयं खाने की प्रेरणा देती है। औरों की उन्नति में अपनी उन्नति मानने की प्रेरणा देती है। जो लोग इस प्रेरणा को जीवन में आत्मसात करके पराई पीड़ा को अपनी पीड़ा समझकर परोपकारमय जीवन अपनाते हैं उनको

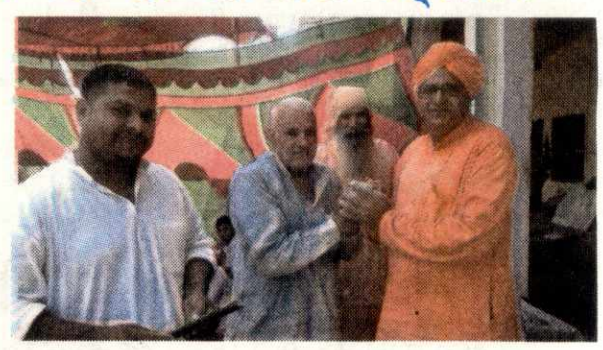

कर्मफल तथा पुनर्जन्म दोनों वैदिक सिद्धान्त समझने ही पड़ेंगे। स्वामी जी ने कहा कि जब कर्मफल निश्चित है और पुनर्जन्म भी निश्चित है तो आत्मालोचन कर शुभ कर्मों की ओर बढ़ें। यज्ञीय कर्म परोपकार के कार्य होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि अगर हम नहीं सम्भले तो भविष्य में मनुष्य जीवन से वंचित हो सकते हैं। धन की लालसा की अन्धी दौड़ से परे होकर डॉ. इकबाल सिंह आर्य सपत्नीक इस यज्ञ में मुख्य यजमान थे। आचार्य पवन शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया यह तीन दिवसीय सामवेद पारायण यज्ञ डॉ. इकबाल के द्वारा आयोजित 14वाँ सामवेद पारायण यज्ञ था। इससे पूर्व निरन्तर 13 वर्षों से वे अपने निवास पर सामवेद पारायण यज्ञ नियमित रूप से करा रहे हैं। यज्ञ में गहरी आस्था और श्रद्धा रखने वाला यह पूरा परिवार धार्मिक मान्यताओं से ओत-प्रोत त्याग-तपस्या का जीवन जीने वाला परिवार है। इस कार्यक्रम में ब्र. सहसरपाल का विशेष सहयोग रहा तथा श्री ताराचन्द योगी ने भी यज्ञ के अवसर पर पधारकर शोभा बढ़ाई।

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत (उ. प्र.) के प्रांगण में
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन तथा महर्षि दयानन्द की प्रतिमा का अनावरण
हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन

बड़ौत, 15 सितम्बर : भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की कर्मभूमि रहा बड़ौत आज आर्यों के गगनभेदी नारों से गुंजायमान हो गया। इसी भूमि से चौधरी साहब जन-प्रतिनिधि के रूप में विधानसभा तथा देश की संसद तक पहुंचते रहे। यहीं से प्रतिनिधि चुनकर वे देश के प्रधानमंत्री भी बने। उनकी इसी कर्मस्थली में स्थित देश के प्रतिष्ठित महाविद्यालय जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत की प्रबन्ध समिति के तत्वावधान में एक भव्य प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्यनेता चौधरी सुरेन्द्र सिंह जी ने की तथा स्वागताध्यक्षीय भाषण कॉलेज की प्रबन्ध समिति के प्रधान चौधरी वीरेन्द्र पाल सिंह जी ने प्रस्तुत किया। चौधरी वीरेन्द्र पाल सिंह जी ने अपने कार्यकाल में किये गये विविध महत्त्वपूर्ण कार्यों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि जब उन्होंने कॉलेज के प्रबन्धक का कार्यभार संभाला था तो उन्हें बैंक खाते में मात्र 2 रुपये मिले थे। परन्तु आज डिग्री कॉलेज और इण्टर कॉलेज के बने नये भवनों में सीमेंट और बजरी से बनी सड़कों और विशाल मुख्य द्वारों का जो ढांचा दिखाई दे रहा है वह सब उनकी कार्यकारिणी के सदस्यों के परिश्रम तथा क्षेत्र की मेहनतकश जनता के सहयोग से बना है। आज कॉलेज के कोष में लाखों रुपये की स्थिर निधि स्थापित है। उन्होंने कॉलेज की स्थापना से लेकर वर्तमान तक आर्य समाज तथा महर्षि

दयानन्द एवं आर्यनेता चौधरी चरण सिंह को अपना प्रेरणा स्रोत बताया। उन्होंने कहा कि कॉलेज प्रांगण में विशाल यज्ञशाला स्थापित है जिसमें समय-समय पर विशेष यज्ञों का आयोजन किया जाता है जिससे युवाओं को चरित्रवान बनाकर विशेष दिशा प्रदान की जा सके। चौधरी वीरेन्द्र पाल सिंह जी ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में युवा निर्माण अभियान, नशाबन्दी आन्दोलन, कन्या भ्रूण हत्या जैसी जघन्य बुराईयों के विरुद्ध सक्रिय सहयोग की भूमिका का आश्वसन दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के आकर्षक व्यक्तित्व से हम बहुत प्रभावित हैं तथा क्षेत्र की जनता चाहती है कि स्वामी जी समय-समय पर आकर हम सबको सामाजिक बुराईयों से संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते रहें। इससे पूर्व कार्यक्रम के प्रारम्भ में महर्षि दयानन्द की भव्य प्रतिमा का अनावरण स्वामी आर्यवेश जी के कर-कमलो से सम्पन्न हुआ। स्वामी जी को मुख्यद्वार से प्रतिमा स्थल तक भारी जन-समूह के साथ ढोल-नगाड़े बजाते हुए आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के जयकारों से क्षेत्र को गुंजायमान करते हुए प्रतिष्ठित महानुभावों तथा छात्र-छात्राओं के काफिले के साथ स्वागत करते हुए ले जाया गया। स्वामी जी ने आचार्य सूर्यदेव जी के साथ प्रार्थना मंत्रों के सस्वर उच्चारण के साथ प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर मेजर जनरल श्योराज सिंह अहलावत के कर-कमलों द्वारा एक अज्ञात किसान की प्रतिमा का भी अनावरण किया गया। पूर्व विधायक स्वामी ओमवेश जी के कर-कमलों द्वारा पृथ्वी सिंह बेधड़क सिंह द्वार तथा मेजर जनरल वीरेन्द्र सिंह पूनिया द्वारा वीरेन्द्र वर्मा द्वार तथा मेजर जनरल कर्ण सिंह सोलंकी द्वारा चेयरमैन मुंशी सिंह द्वार का उद्‌घाटन भी किया गया।

इन कार्यक्रमों के उपरान्त विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द एवं अज्ञात किसान की प्रतिमा के अनावरण की संगति बैठाते हुए कहा कि यह एक संयोग है कि महर्षि दयानन्द ने किसानों को राजाओं का राजा कहा है। और आज इस कॉलेज की प्रबन्ध समिति ने स्वामी दयानन्द जी और अज्ञात किसान की प्रतिमा लगाकर एक प्रशंसनीय कार्य किया है। स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के जीवन की वह घटना सुनाई जिसमें भारत की गरीबी और आर्थिक दुर्दशा पर वे फूट-फूटकर रोये थे। इस घटना को सुनकर लोग अपने अश्रु रोक नहीं सके। स्वामी जी ने बताया कि जो महर्षि दयानन्द अपनी बहन तथा चाचा की मृत्यु पर भी नहीं रोये थे वे एक विधवा माँ की गरीबी और बदनसीबी को देखकर, जो अपने दो वर्ष के बच्चे को कफन भी नहीं दे पाई थी, स्वामी जी रात के अंधेरे में उस माँ को देखकर करुणा से रो पड़े थे। स्वामी जी ने इसी प्रकार की एक घटना चौधरी चरण सिंह के जीवन की भी सुनाई। उन्होंने कहा कि चौधरी साहब जब प्रधानमंत्री थे तो एकबार वे उड़ीसा गये वहाँ उन्होंने एक आदिवासी के घर को देखने की इच्छा प्रगट की। जब वे उस आदिवासी के घर के दरवाजे पर पहुँचे तो एक नौजवान लड़की ने उन्हें यह कहकर अन्दर जाने से रोक दिया कि उसके घर में तीन महिलाएँ हैं एक मेरी माँ और मैं दो बहने हूँ मेरे पास केवल दो ही साड़ियाँ हैं अत: जब एक को बाहर जाना पड़ता है तो वह एक साड़ी पहनकर बाहर जाती है और दूसरी को अपनी इज्जत छुपाने के लिए घर के अन्दर ही रहना पड़ता है। चौधरी चरण सिंह जी ने जब विशाल जनसमुदाय के बीच में यह घटना सुनाई तो वे रो पड़े थे। स्वामी आर्यवेश जी ने जब ये दोनों घटनाएं सुनाई तो सैकड़ों लोग आंसू पोछते देखे गये तथा सारा जन-समूह भावुक हो उठा। स्वामी जी ने वर्तमान में बढ़ती नशाखोरी, अश्लीलता, महिला उत्पीड़न तथा कन्या भ्रूण हत्या आदि का जीवित शब्द चित्रण करते हुए सभा को अपने विचारों से अत्यधिक प्रभावित किया। बीच-बीच में जन-समूह के बीच से करतल ध्वनि महर्षि दयानन्द के नारे तथा आर्य समाज जिन्दाबाद के नारों से सारा सभा स्थल गूंजता रहा। जन-समूह द्वारा स्वामी जी के उद्‌बोधन को सुनने की उत्कंठा इतनी बड़ी थी कि स्वामी जी का ओजस्वी तथा विचारोत्तेजक उद्‌बोधन अनवरत पौने दो घण्टा चला। स्वामी जी के इस उद्‌बोधन से नई चेतना तथा जागृति का संचार जन समूह में पैदा हुआ। अनेकों लोग प्रस्ताव भेज रहे थे कि वे सारे इलाके में जागृति पैदा करना चाहते हैं अत: स्वामी जी हम सबको नेतृत्व प्रदान करें, स्वामी जी ने भी उन्हें निराश न करते हुए आश्वासन दिया कि मैं समय-समय पर आप सबके बीच आता रहूँगा।

इस अवसर पर पूर्व गन्ना मन्त्री, उ. प्र.-स्वामी ओमवेश, मेजर जनरल डॉ. श्योराज सिंह अहलावत, मेजर जनरल वीरेन्द्र सिंह पूनिया, मेजर जनरल कर्ण सिंह सोलंकी, इण्टर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आत्माराम, मन्त्री श्री योगेन्द्र सोलंकी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। प्रसिद्ध भजनोपदेशक घनश्याम प्रेमी जी के जोशीले भजनों का जन-समूह ने आनन्द उठाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री यशवीर सिंह तोमर जी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में ब्र. रामफल आर्य, श्री शिवकुमार आर्य, श्री सत्यवीर सिंह फौजी-प्रधान ग्राम सिरसली आदि का भी विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम के पश्चात् भव्य भोज का आयोजन किया गया था। जिसमें हजारों व्यक्तियों ने सुस्वादु भोजन का आनन्द उठाया।

thearyasamaj.org

Humble request to all officials of all Arya Pratinidhi Sabha

- Swami Aryavesh

At the tirme of Swami Dayanand Appearance the society was grasped in immoral thoughts, lack of knowledge and unability to diffrentiate truth and un-truth. Swami Dayanand took stronge steps to improve the conditionof the society with his new idias and thoughts. But when we see the present condition of society, we find that the immorality, bad habits and mischieves have increased manyfold and as such the work of we Aryans has become more responsible and hard. But it seems to be difficult because we are divided in groups. Maharshi stated that the main cause for the down fall of Bharat was disintigration and differences in between. This disintegration, jealousy to each other and selfishness has brought the bad days to the Arya Samaj.

After taking the responsibility of Presidentship of Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha, where ever I go peoples ask me to remove the separation and have a unity among each other. At my level I am persueing my hard to vanish the separation and for this I hope from all the officials of Arya Samaj that they should try thier hard to remove the differences and be united, because till the differences exist unity can not be estabilished. Due to our separation and internal quarrel young generation and new members who are devotted to the vedic ethics, are not joining the Arya Samaj.

there were two factors to attract the new members, first were

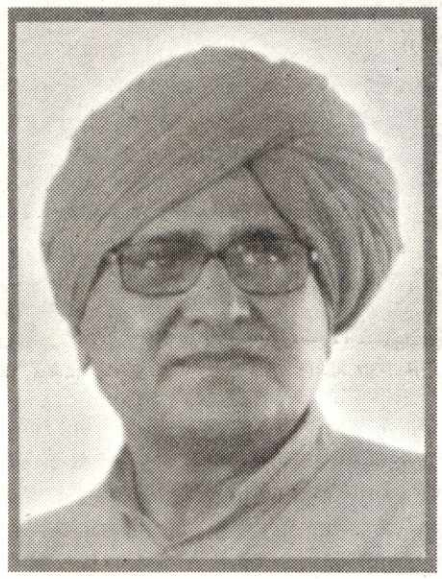

ten Principles of Arya Samaj and the sceond was the high character of its members. But to day we notice absence of these two factors. There is a great need to ivredicate this absenceness.

Our first priority is to divert the attention of the new genreration towards the Arya Samaj, so that we may be able to fight against the social evils more strongly. All the present officials of Arya Samaj should worke hard to propagate the principles of Arya Samaj and to make them aquinted with the social work done by Maharshi Dayanand.

Great efforts should be made to make the Arya Samaj Mandirs center for self study, Spritual learning, Health improving and social studies, so that youths may join Arya Samaj, for this you may take the benifits of Sannyasi, vanprasthi and Bhajnoupdeshak too.

There is a need to improve the internal conditions of Gurakuls woking in your teritories.

'Yuva Charitra Nirman Shivir' Should be organized to mouled thier mind on right direction for irredication of social evrils.

All the officials of Arya Samaj should work to propagate the vidic ethics and to serve the peopls in thier difficult periods. Serving to people is the great weapon to win their heart and attract them to join Arya Samaj.

- गीत -

- बाबूराम शर्मा विभाकर

अनगिन दीप जला कर आहा,
महादीप हो गया विलीन।

(1)

राष्ट्र धर्म की कर व्याख्या को,
आर्यावर्त को किया सुसज्जित।
छाया तिमिर अविद्या का था,
विद्या को कर दिया समादृत।
राष्ट्र जागरण के दिवलों से,
जला ज्योतियाँ प्रखर अदीन।

(2)

वेदों को ला दिया गर्व वह,
जिसको हम भूले बैठे।
वेदों की ही ओर लौटना,
व्यर्थ रहें हम क्यों ऐंठे!
शक्ति समर को प्राप्त करेंगे,
कौन भला ले उसको छीन।

(3)

नारी का सम्मान करें हम,
दुखिया क्यों बनकर रहना।
बहू-बेटियों की रक्षा में,
नर को चेतनता रखना।
नारी को माता-श्री पद दें,
वेदों की बजवा कर बीन।

- 52/2, लाल क्वॉर्टर्स, गाजियाबाद (उ. प्र.)

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

मानव सेवा प्रतिष्ठान के तत्वावधान में
छात्रवृत्ति एवं अभिनन्दन समारोह का सफलतम आयोजन

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवं नॉर्दन अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा दिनांक 12 अक्टूबर, 2014 को अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति समारोह का भव्य आयोजन 119, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। समारोह का शुभारम्भ प्रात: यज्ञ के द्वारा आरम्भ किया गया, जिसमें श्री वीरसेन मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू. एस. ए.), श्री सत्य प्रसाद एवं श्री सुशीला बलदेव मल्हू तथा श्री रघुवर रामटहल एवं श्रीमती पहलाद (सूरीनाम, दक्षिण अमेरिका) तथा श्रीमती पण्डिता सुमित्रा दुर्गा (हॉलैण्ड) ने यजमान पद को सुशोभित किया तथा यज्ञ ब्रह्मा का दायित्व रामपाल शास्त्री ने सम्भाला। इस यज्ञ में पण्डिता सुशीला बलदेव मल्हू (सूरीनाम) के साथ 20 व्यक्तियों का समूह जो सूरीनाम (दक्षिण अमेरिका) से भारत भ्रमण पर आये हुए थे, उन सबने भी यज्ञ में आहुति प्रदान कर धर्मलाभ उठाया।

रामपाल शास्त्री एवं श्री चन्द्रदेव शास्त्री के संयुक्त संयोजन में तथा श्री वीरसेन मुखी (यू. एस. ए.) की अध्यक्षता में प्रात: 10 बजे अभिनन्दन एवं छात्रवृत्ति प्रदान करने का कार्यक्रम गुरुकुल गौतमनगर के विशाल सभागार में दीप-प्रज्ज्वलन के साथ प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन भाषण में श्री

चतर सिंह नागर (दक्षिण दिल्ली वेद-प्रचार मण्डल) ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएँ दी। प्राध्यापिका अमर कौर आर्या (कन्या गुरुकुल, पाढ़ा, करनाल, हरियाणा) ने अपने वक्तव्य में मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यों की सराहना एवं प्रशंसा के साथ-साथ ऋषि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के नारी-जाति पर जो उपकार हैं, उनकी चर्चा की।

श्रीमती सुशीला बलदेव मल्हू (सूरीनाम) ने मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा इस आयोजित कार्यक्रम को देखकर कार्यक्रम को अभूतपूर्व बताया। सूरीनाम एवं हॉलैण्ड के प्रसिद्ध पण्डित बलदेव तिवारी की चर्चा करते हुए उन्होंने बतलाया कि किस प्रकार से इनका समस्त परिवार आर्य समाज के प्रचार और प्रसार में संलग्न है।

इस कार्यक्रम में आर्य जगत् के छह विद्वान्-विदूषियों का सम्मान करते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं 11-11 हजार रुपये की सम्मानित राशि श्री वीरसेन मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू. एस. ए.), श्री सत्यप्रसाद एवं श्रीमती सुशीला बलदेव मल्हू (सूरीनाम), श्रीमती दिलभरी (ईस्माईला, हरियाणा) के कर कमलों से प्रदान की गई, जिसमें (1) पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी (आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक, हरियाणा) को श्री चौधरी रामपत आर्य ईस्माईला रोहतक हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। (2) आचार्य वेदव्रत (श्रुति विज्ञान, आचार्य कुलम, छपरा, शाहबाद, हरियाणा) को स्व. श्री पण्डित ऋषि बलदेव तिवारी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। (3) आचार्य श्रीमती निर्मला जी (कन्या गुरुकुल मौर माजरा, पानीपत, हरियाणा) को श्रीमती लक्ष्मीदेवी, नौलथा, पानीपत, हरियाणा स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। (4) डॉ. अमीता आर्या (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, ज्योतिबा फूले नगर, उत्तर प्रदेश) को स्व. श्रीमती शीलवती देवी बल्लभगढ़, भरतपुर, राजस्थान स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया। (5) श्री चन्द्रभूषण शास्त्री (अधिष्ठाता, गुरुकुल पौंधा, देहरादून, उत्तराखण्ड) को स्व. श्री मास्टर रतन सिंह जी सुलतानपुर डबास, दिल्ली स्मृति सम्मान से सम्मानित किया। (6) स्नातिका डॉ. सुरभि आर्या (कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, ज्योतिबा फूले नगर, उत्तर प्रदेश) को श्रीमती ईतवारिया रामदास तिवारी हॉलैण्ड स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा अनेक शिक्षा संस्थाओं एवं गुरुकुलों के जरूरतमंद, मेधावी एवं योग्य 85 छात्र-छात्राओं को 5 लाख रुपये की आर्थिक सहायता श्री वीरसेन मुखी एवं पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी के कर कमलों से वितरित की गई। इस कार्यक्रम में श्री वीरसेन मुखी एवं श्रीमती सविता मुखी (यू. एस. ए.) द्वारा प्रदत्त धनराशि से प्रकाशित "अष्टाध्यायी भाष्य प्रवचनम्" का विमोचन भी किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नॉर्थन अमेरिकन जाट चैरिटी द्वारा प्रेषित 10 लाख रुपये की सहायता राशि भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों से आये हुए 65 छात्र-छात्राओं को वितरण करना रहा साथ ही यू. एस. ए. से पधारे श्री वीरसेन मुखी जी द्वारा गुरुकुल गौतमनगर (दिल्ली) के 150 छात्रों को 40 हजार रुपये मूल्य की गर्म चद्दरें प्रदान करना भी इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण केन्द्र रहा।

सम्मानित विद्वान् विदूषियों ने अपने वक्तव्य में मानव सेवा प्रतिष्ठान के इस कार्यक्रम की चर्चा करते हुए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसे अद्भुत एवं प्रसंशनीय कार्य बताया। पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी, आचार्य वेदव्रत जी, श्रीमती निर्मला जी, डॉ. अमीता आर्या का उद्बोधन छात्र-छात्राओं के लिए अति उपयोगी रहा।

इस अवसर पर डॉ. अजय कुमार आर्य (जे. एन. यू.), पण्डित देवानन्द भगेलु (रोटरडैम, हॉलैण्ड), डॉ. कंवर सिंह (वेदवीर शास्त्री, वैंकटेश्वर कॉलेज, दिल्ली), बेटी बचाओ आन्दोलन की पुरोधा बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र जी, डॉ. जयसिंह (राजस्थान) आदि ने भी अपने अनुभवों से छात्र-छात्राओं को लाभान्वित करते हुए मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यों की सराहना की। अन्त में कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री वीरसेन मुखी (यू. एस. ए.) ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में इस कार्यक्रम की भूरि-भूरि सराहना करते हुए अपना सहयोग और आशीर्वाद आगे भी इसी प्रकार निरन्तर जारी रखने का आश्वासन दिया।

रामपाल शास्त्री के विषय में चर्चा करते हुए आपने कहा कि जिस लगन व उत्साह से अपने सभी साथियों के साथ इस उत्तरदायित्व का निर्वहन कर रहे हैं, उसके लिए हम सभी आर्यजन इनके आभारी हैं एवं मैं व्यक्तिगत रूप से सभी से यह निवेदन करता हूँ कि इनका सहयोग कर संस्था के प्रत्येक सकारात्मक कार्य को प्रगति पथ पर अग्रसर करें। इस अवसर पर छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं ने भी अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हुए भजन एवं भाषण के माध्यम से कार्यक्रम को रोचक बनाया, जिसमें कन्या गुरुकुल (पाढ़ा, करनाल), कन्या गुरुकुल (ऐंचरा कला, जीन्द), कन्या गुरुकुल (चोटीपुरा, उत्तर प्रदेश) एवं सोमवीर हंसराज कॉलेज (दिल्ली) का प्रदर्शन अति सराहनीय रहा।

मानव सेवा प्रतिष्ठान के प्रधान श्री सोमदेव शास्त्री, उपप्रधान श्री हरवीर सिंह शास्त्री, मन्त्री श्री चन्द्रदेव जी शास्त्री आदि सभी अधिकारियों ने आये हुए अतिथियों को स्मृति चिन्ह एवं अंङ्वस्त्र प्रदान करके सम्मानित किया एवं आये हुए सभी अभ्यागत महानुभावों का धन्यवाद किया। अपराह्न 1.30 बजे शान्तिपाठ के उपरान्त ऋषि लंगर (भण्डारे) के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

- डॉ. कंवर सिंह शास्त्री, महामन्त्री मानव सेवा प्रतिष्ठान

श्री अरविन्द मेहता के निवास पर यज्ञ

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं स्वामी सर्वानन्द सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के प्रधान श्री अरविन्द मेहता के निवास स्थान दीनानगर (पंजाब) में विशेष यज्ञ का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा भगवानदेव चैतन्य थे। 5 से 7 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले यज्ञ में श्री मेहता जी के विशेष आग्रह पर स्वामी जी अपने सहयोगी ब्र. दीक्षेन्द्र जी के साथ सम्मिलित हुए। स्वामी जी 5 अक्टूबर को अमृतसर से एक कार्यक्रम में सम्मिलित होने के बाद 6 अक्टूबर को दीनानगर पहुँचे। स्वामी जी ने इस अवसर पर 3 व्याख्यान दिये। गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने मनुष्य जीवन में शांति प्रयास करने तथा मनुष्य जीवन की सार्थकता पर स्वामी जी ने अपने सारगर्भित तथा ओजस्वी व्याख्यान से श्रोताओं पर विशेष प्रभाव छोड़ा। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा श्री भगवान देव चैतन्य के भी विद्वतापूर्ण आध्यात्मिक प्रवचन होते रहे। उनके साथ वानप्रस्थायति जी भी यज्ञ में विराजमान रही। उनके भी मधुर गीत सुनने का अवसर श्रोताओं को प्राप्त हुआ। ज्ञातव्य हो कि श्री अरविन्द मेहता के एक मात्र सुपुत्र श्री राजन मेहता एवं उनकी पत्नी भूमिका मेहता को 12 वर्ष पश्चात् 2 जुड़वा बच्चे एक पुत्र तथा एक पुत्री प्राप्त हुए जिसके कारण पूरे परिवार में प्रसन्नता का वातावरण था। इस प्रसन्नतापूर्ण वातावरण में बच्चों का चूड़ाकर्म संस्कार भी विशेष रूप से किया गया।

आर्य नेता डॉ. रविकान्त को मातृ शोक

आर्य नेता डॉ. रविकान्त जी की माता श्रीमती सावित्री आर्या जी का दिनांक 15 अक्टूबर, 2014 को आकस्मिक निधन हो गया है। सावित्री जी आर्य नेता एवं सार्वदेशिक सभा के पूर्व प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले जी की सुपुत्री एवं स्व. श्री सूर्यदेव जी की धर्मपत्नी थीं। वे अपने पीछे दो विवाहित पुत्र एवं एक विवाहित सुपुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनके बड़े सुपुत्र डॉ. रविकान्त जी आर्य समाज, दीवान हाल के मन्त्री हैं तथा उनका पूरा परिवार आर्य समाज संगठन से जुड़ा हुआ है। श्रीमती सावित्री जी आर्य संस्कारों से ओत-प्रोत एक विदुषी देवी थीं। उनके निधन से आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति हुई है। इस दु:ख की घड़ी में सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दु:ख प्रकट करते हुए, परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा की सद्गति एवं शान्ति की प्रार्थना करते हुए उनके पारिवारिक जनों को इस महान दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना करते हैं। प्राप्त सूचना के अनुसार शान्ति यज्ञ दिनांक 19 अक्टूबर, 2014 को सत्भावा सीनियर सेकेण्डरी स्कूल आर्य समाज रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5 में रखा गया है।

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान्, समर्पित व सरल व्यक्तित्व
पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के
75वें जन्मोत्सव पर
राष्ट्रीय स्तर पर राजधानी दिल्ली में
अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह
रविवार 16 नवम्बर, 2014, प्रात: 10 से 2 बजे तक
स्थान : योग निकेतन, रोड नं.-78, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-26

आर्य समाज के समस्त संन्यासी, विद्वान, नेता एवं पदाधिकारी इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभकामनायें प्रदान करेंगे तथा यथेष्ट सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे।

अपील : स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान स्वरूप इस अवसर पर एक थैली भेंट की जायेगी जिसके लिए आप अपना सहयोग क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा **'स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति'** के नाम से निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

इस अवसर पर स्वामी जी के सम्मान में अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया जाना है जिसका सम्पादन डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण कर रहे हैं। स्वामी जी से परिचित महानुभावों से अपील है कि उनके बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख अथवा कविता अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशानार्थ यथाशीघ्र भेजें। वेद, महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, यज्ञ, योग के सम्बन्ध में रचनाएँ सदर आमंत्रित हैं। कृपया अपनी रचना निम्न पते पर भेजें।

- डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण, सम्पादक-स्वामी डॉ. दिव्यानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति

मुख्यालय : पातंजल योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार-249407 (उत्तराखण्ड)

शाखा कार्यालय : "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

दूरभाष : 011'23274771, 23260985,

ई-मेल :- sarvadeshik@gmail.com, aryayouth@gmail.com

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-110001 On 17–18 अक्टूबर, 2014
प्रकाशन की तिथि : 16 अक्टूबर, 2014
वैदिक सार्वदेशिक
16 से 22 अक्टूबर 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

वेद वाणी

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

ओ३म् भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

ऋ. ३/६२/१०, यजु० ३/३५, साम० उ० ६/३/१०

ऋषि विश्वामित्र - देवता सविता - छन्द गायत्री

सवितुः = प्रेरक, उत्पादक देवस्य = परमात्मदेव के तत् = उस वरेण्यम् = वरने योग्य भर्गः = शुद्ध तेज को धीमहि = हम धारण करते हैं, ध्यान करते हैं यः = जो धारण किया हुआ तेज नः = हमारी धियः = बुद्धियों को, कर्मों को प्रचोदयात् = सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता रहे।

पद्यानुवाद :-

परमात्मदेव ! प्रेरक प्रभु तव
शुद्ध तेज को करें वरण।
जो भी है वरणीय उसे हम
करें निरन्तर नित धारण।
तेज तुम्हारा परिलक्षित वह,
करे बुद्धियों को निर्मल।
प्रेरित करता रहे हमें वह,
जीवन पथ पर सदा विमल।
उत्तम श्रेष्ठ विचारों – कर्मों
में हम निज जीवन व्यापें।
उत्तम पथ के पथिक बनें
हम अच्छाई को ही छापें।

– बाबूराम शर्मा विभाकर

मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं – यह मैं नहीं जानता। किस समय क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य, क्या धर्म है क्या अधर्म – यह मैं नहीं जान पाता। सुना है कि बड़े-बड़े ज्ञानी भी बहुत बार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, परन्तु क्या इसका कोई इलाज नहीं है?हे सवितः देव ! हमारे उत्पादक देव ! क्या तूने हमें उत्पन्न करके इस अंधेरे संसार में यूं ही छोड़ दिया है?कोई निर्भ्रान्त (निश्चित) प्रकाश हमारे लिए तुमने नहीं दिया है – यह कैसे हो सकता है?नहीं, तुम अपने अनन्त प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहें और यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग' (विशुद्ध तेज) को अपने में धारण करने लगेंगे जो वरणीय है, जिसे हर किसी को लेना चाहिए – जिसे प्रत्येक मनुष्य – जन्म पाने वाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस तेरे वरणीय शुद्धस्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेंगे, अर्थात् जितना तेरा कीर्त्तन सुनेंगे, तेरा विचार करेंगे, तुझमें मन एकाग्र करेंगे, तेरा जाप करेंगे, तुझमें अपना प्रेम समर्पित करेंगे उतना ही तेरा शुद्धस्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जाएगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मों को ठीक दिशा में प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्ध स्वरूप के साथ तुम ही मेरे हृदय में बस जाओगे और तुम ही मेरी बुद्धि, मन आदि सहित इस शरीर के संचालक हो जाओगे। फिर धर्म अधर्म की उलझन कहां रहेगी! तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इस शरीर की एक एक चेष्टा में शुद्ध धर्म की ही, वर्षा होगी। इसलिए हे प्रभो! हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने में धारण करने में लगते हैं। एक एक मानसिक विचार के साथ, एक एक जन के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेंगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने में अधिकाधिक एकत्र करते जाएंगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ साथ धार्म के निश्चय में पटु होती हुई हमारी बुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूर्ण रूप से ठीक मार्ग पर चलने वाली हो जाएगी।

(वैदिक विनय से साभार)

अंग्रेजी अनुवाद

O Sun, Thy Divine Light
To be hailed warmly by us.
May move us The Devotees forward at ease.
To enjoy the actions of our intellects
Being refined and put on the path
Of what is right, the acceptable way of light
Against all ignorance we may fight,
O God ! Thy Divine Light !

- B.R. Sharma Vibhakar

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

फेसबुक : Swami Aryavesh
ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/– रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/– रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/– रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।